भारत में बड़े बांध - एक नज़र

आर. रंगाचारी

विश्व बांध आयोग ने अपने कामकाज के दौरान कई अध्ययन करवाए थे। इनमें से एक अध्ययन भारत के बांधों का भी था। इस अध्ययन का काम पांच सदस्यों के एक दल को सौंपा गया था। इस दल के सदस्यों ने बांधों के अलग-अलग पहलुओं की समीक्षा करके अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की। यहां उस रिपोर्ट के प्रथम अध्याय का सरांश प्रस्तुत है। आर. रंगाचारी जल संसाधन प्रबंधन के क्षेत्र में एक जानी-मानी हस्ती हैं।

भाग 1 : बड़े बांध और सिंचाई

प्रागैतिहासिक काल से ही खेती भारत के लोगों का प्रमुख व्यवसाय रही है और इसलिए खेती का निरन्तर विकास यहां के शासकों का एक प्रमुख सरोकार रहा है। भारत की भौगोलिक बनावट तथा जलवायु में विविधता सर्वविदित है। वर्षा मॉनसून पर निर्भर है तथा अधिकांश वर्षा जून से अक्टूबर के बीच के चार महीनों की छोटी-सी अवधि में हो जाती है। इस अवधि में भी कुछ ही दिनों सघन वर्षा होती है। वर्षा के भौगोलिक व समयगत वितरण तथा समय-समय पर मानसून के नाकाम रहने के जोखिम से खेती प्रभावित होती है। भारत के शासकों ने अपनी ताकत वर्षा की नाकामी या अपर्याप्तता के विरुद्ध कुछ सुरक्षा प्रदान करने में लगाई थी। फसलों के लिए सिंचाई और लोगों व पशुओं के लिए पेयजल के भण्डार और कुओं की व्यवस्था राज्यों द्वारा की जाती थी।

सिंचित खेती तथा सामुदायिक जल प्रदाय हेतु शासकों के प्रयासों के उल्लेख प्राचीन शास्त्रों, साहित्य व इतिहास में मिलते हैं। इनमें कुओं, तालाबों, जलाशयों, बांधों व नहरों तथा उनके संचालन व रखरखाव के अलावा इस संदर्भ में राज्य के दायित्वों का भी ज़िक्र है। राजा युधिष्ठिर से नारद मुनि द्वारा यह पूछे जाने का उल्लेख है (लगभग 3150 ईसा पूर्व) - ''क्या किसान बलिष्ठ और समृद्ध हैं? क्या बांध पानी से भरे और बड़े-बड़े हैं, क्या ये राज्य के विभिन्न भागों में स्थित हैं? क्या खेती मात्र वर्षा पर निर्भर नहीं है?''

सम्राट चन्द्रगुप्त (लगभग 300 ईसा पूर्व) के दरबार में आया यूनानी दूत मेगास्थनीज़ लिखता है कि ज़िला अधिकारी 'उन तालाबों का निरीक्षण करते हैं जिनसे पानी को नहरों की शाखाओं में छोड़ा जाता है ताकि प्रत्येक को उचित लाभ मिल सके।' भारत के कई इलाकों में प्राचीन सिंचाई संरचनाओं व जलाशयों के भग्नावशेष मिलते हैं। प्राचीन संरचनाएं मूलतः वर्षा के अतिशेष पानी को रोकने के लिए तालाबों व जलाशयों के रूप में हैं जिनका पानी नहरों में डाला जाता था।

प्रायद्वीपीय व पश्चिमी भारत में, जहां कम वर्षा होती है, वहां ऐसी प्रथाएं काफी प्रचलित थीं। धीरे-धीरे जल संसाधन विकास, खासकर सिंचाई का कामकाज राज्य ने अपने हाथों में ले लिया।

बांधों की परम्परा

कावेरी पर निर्मित विशाल अनिकट प्राचीनतम नहर तंत्रों में से एक है। इसे दूसरी सदी में बनाया गया था। निरन्तर सुधारों व विस्तार के साथ यह आज लगभग दो हज़ार साल बाद भी काम कर रहा है। विजयनगर साम्राज्य ने 15वीं सदी में दक्षिण में सिंचाई विकास पर ज़ोर दिया था। उन्नीसवीं सदी में ब्रिटिश हुकूमत के दौरान भारत में पुरानी संरचनाओं के जीर्णोद्धार, सुधार व विस्तार के अलावा नए निर्माण भी हुए। जैसे ऊपरी गंगा नहर, कृष्णा व